

Dr. Priti Ranjan

H. O. D history department

H. D jain college, ara

Notes for pg sem 1

भारतीय इतिहास लेखन की परंपरा का विकास प्राचीन काल से आधुनिक काल तक समझाइए।

इतिहास लेखन किसी भी सभ्यता की आत्मचेतना का दर्पण होता है। भारतीय इतिहास लेखन की परंपरा अत्यंत प्राचीन, समृद्ध और निरंतर विकसित होती रही है। भारत में इतिहास केवल घटनाओं का क्रम नहीं, बल्कि संस्कृति, धर्म, नीति और दर्शन का प्रतिबिंब रहा है। यहाँ इतिहास का उद्देश्य मात्र “क्या हुआ” बताना नहीं, बल्कि “उससे क्या सीखा जा सकता है” यह बताना भी रहा है।

भारतीय इतिहास लेखन की परंपरा को मुख्यतः तीन कालों में बाँटा जा सकता है—

1. प्राचीन काल की परंपरा
2. मध्यकालीन परंपरा
3. आधुनिक काल की परंपरा

1. प्राचीन भारत में इतिहास लेखन की परंपरा

भारतीय इतिहास लेखन का आरंभ वैदिक काल से ही माना जाता है। यद्यपि पश्चिमी अर्थों में “इतिहास” जैसा रूप नहीं था, फिर भी “इतिहास” शब्द ऋग्वेद में ‘इत्थं-अस’ (जो हुआ) से बना है, जिसका अर्थ है — जो घटित हुआ उसका वर्णन।

(क) वैदिक कालीन स्रोत

- ऋग्वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद आदि ग्रंथों में वंशावली, यज्ञ, राजाओं की उपलब्धियों और सामाजिक जीवन का विवरण मिलता है।
- पौराणिक इतिहास: अठारह पुराणों और उपपुराणों में राजाओं की वंशावली और कथात्मक इतिहास मिलता है।
जैसे – विष्णु पुराण, भागवत पुराण और मत्स्य पुराण आदि में वंशावली का विवरण मिलता है।

(ख) महाकाव्य परंपरा

- रामायण (वाल्मीकि) और महाभारत (व्यास) केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं, बल्कि उस युग के सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक जीवन का वृत्तांत भी हैं।
- इन ग्रंथों में नायकों के चरित्र के माध्यम से आदर्श समाज की कल्पना की गई है।

(ग) बौद्ध और जैन परंपरा

- बौद्ध ग्रंथ जैसे दीपवंश और महावंश (श्रीलंका) ऐतिहासिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।
- जैन ग्रंथ जैसे परिशिष्टपर्व और कल्पसूत्र में जैन तीर्थंकरों और राजाओं का विवरण मिलता है।

(घ) राजवंशीय अभिलेख और शिलालेख

- अशोक के अभिलेख (तीसरी सदी ई.पू.) वस्तुतः प्राचीन भारत के प्रथम शिलालेखीय इतिहास हैं।
- हर्षचरित (बाणभट्ट), राजतरंगिणी (कल्हण, 12वीं सदी) जैसे ग्रंथ ऐतिहासिक दृष्टि से उच्च कोटि के हैं।
विशेषकर राजतरंगिणी को भारत का पहला व्यवस्थित ऐतिहासिक ग्रंथ कहा जाता है, जिसमें कालक्रम, स्रोतों का उपयोग और आलोचनात्मक दृष्टि मिलती है।

2. मध्यकालीन भारत में इतिहास लेखन की परंपरा

मध्यकालीन युग में इतिहास लेखन पर धार्मिक, दरबारी और राजनैतिक प्रभाव दिखाई देता है।

(क) मुस्लिम इतिहास लेखन परंपरा

- तुर्क-अफगान और मुगल शासकों के दरबारों में इतिहास लेखन एक परंपरा बन गई थी।
- उदाहरण :
 - मिन्हाज-उस-सिराज की तबकात-ए-नासिरी

- अमीर खुसरो की खज़ाइन-उल-फ़तूह
- अबुल फज़ल की आइन-ए-अकबरी और अकबरनामा
- बदायूनी की मुन्तख़ब-उत-तवारीख़

इन ग्रंथों में दरबारी दृष्टिकोण प्रधान रहा, जिसमें शासक की प्रशंसा और साम्राज्य की उपलब्धियों का वर्णन किया गया।

(ख) क्षेत्रीय और भक्ति परंपरा का इतिहास लेखन

- दक्षिण भारत में चोल और पांड्य राजाओं के अभिलेखों में राज्य की उपलब्धियाँ दर्ज की गईं।
- संत कवियों (कबीर, मीरा, तुलसी) की रचनाएँ अपने समय के समाज का सजीव इतिहास प्रस्तुत करती हैं।

3. आधुनिक भारत में इतिहास लेखन की परंपरा

आधुनिक इतिहास लेखन का विकास ब्रिटिश शासन के साथ हुआ, जब पश्चिमी पद्धति के अनुसार इतिहास लिखने की परंपरा भारत में आई।

(क) औपनिवेशिक इतिहास लेखन (Colonial Historiography)

- ब्रिटिश लेखकों (जैसे जेम्स मिल, एलफिंस्टन, टॉड) ने भारत के इतिहास को “हिंदू, मुस्लिम और ब्रिटिश” तीन कालों में बाँटा।
- इसका उद्देश्य ब्रिटिश शासन को “सभ्यता लाने वाला युग” सिद्ध करना था।

(ख) राष्ट्रवादी इतिहास लेखन (Nationalist Historiography)

- भारतीय विद्वानों ने औपनिवेशिक दृष्टि का विरोध किया।
- आर.सी. मजूमदार, के.पी. जायसवाल, विष्णु शास्त्री चिपलूणकर, जदुनाथ सरकार आदि ने भारतीय गौरव को पुनर्स्थापित किया।

(ग) मार्क्सवादी इतिहास लेखन (Marxist Historiography)

- डी.डी. कोसंबी, आर.एस. शर्मा, बिपन चंद्र आदि ने वर्ग-संघर्ष, आर्थिक और सामाजिक संरचना के आधार पर इतिहास का विश्लेषण किया।

(घ) उपालंभ (Subaltern) और स्त्रीवादी इतिहास लेखन

- रणजीत गुहा के नेतृत्व में Subaltern Studies Group ने आम जनता और किसानों के दृष्टिकोण से इतिहास लिखना शुरू किया।

- स्त्रीवादी इतिहासकारों ने महिलाओं की भूमिका और योगदान को प्रमुखता दी।

4. निष्कर्ष

भारतीय इतिहास लेखन की परंपरा निरंतर परिवर्तनशील रही है –

- प्राचीन काल में यह धार्मिक और नैतिक मूल्यपरक थी,
- मध्यकाल में दरबारी और धार्मिक दृष्टि से प्रेरित रही,
- आधुनिक काल में यह वैज्ञानिक, वस्तुनिष्ठ और जनकेंद्रित रूप धारण कर चुकी है।

इस प्रकार, भारतीय इतिहास लेखन का विकास *संस्कृति से विज्ञान, आस्था से विश्लेषण और राजा से जनता* तक की यात्रा का प्रतीक है।

संक्षेप में:

भारतीय इतिहास लेखन की परंपरा एक सतत धारा है – जो वेदों से आरंभ होकर राजतरंगिणी, अकबरनामा, जेम्स मिल, आर.सी. मजूमदार और रणजीत गुहा तक पहुँचती है। यह भारत की सभ्यता की गहराई और आत्मबोध की निरंतर खोज का इतिहास है।